2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584- 0517

आधुनिक अर्थव्यवस्था के वृद्धि हेतु रामायण तथा कौटिल्य-अर्थशास्त्र के आदर्श तत्त्व : एक चिन्तन

डॉ. शैलेश डि. पवार
सहायक प्राध्यापक - योग (सं), केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री राजीव गान्धी परिसर, शृंगेरी

शोध निबन्ध सारांश :

प्रस्तावना-

धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात्प्रभवते सुखम्। धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिदं जगत्।।[1]

(धर्म से अर्थ प्राप्त होता है, धर्म से सुख का उदय होता है और धर्म से ही मनुष्य को सब कुछ प्राप्त होता है। इस संसार में धर्म ही सार है।)

आज संपूर्ण संसार अर्थशास्त्र का विचार कर रहा है। "पहले माँग बाद में पूर्ति" (Supply must be the function of demand) यह अर्थशास्त्र का नियम है परन्तु आज सर्वत्र इसके विपरीत आचरण हो रहा है। इसी के कारण आधुनिक अर्थशास्त्रज्ञों के सामने कुछ जटिल प्रश्न उपस्थित हैं- 1) माँग पूरी करने के लिए उत्पादन 2) उत्पादनोपयोगी कर्मचरों की पूर्ति 3) उत्पादित वस्तुओं का विभाजन तथा विनिमय आदि । अर्थशास्त्र संबंधित इन समस्याओं का निवारण आदिकाव्य अर्थात् रामायण तथा कौटिल्य के काल में किया गया था ।

संकेत शब्द– रामायण, कौटिल्य अर्थशास्त्र, अर्थव्यवस्था, आदर्श तत्त्व

विषय का औचित्य एवं महत्त्व-

रामायण के अध्ययन से तत्कालीन अर्थव्यवस्था की कुछ विशेषताएँ उन्मुख होती हैं, जो निम्न हैं:

1. **अर्थशास्त्र से नियंत्रण**- अर्थशास्त्र में केवल रोटी का ही नहीं अपि तु मानवी भावना, वासना तथा उनके नियमन का भी विचार होना चाहिए।
2. **अर्थव्यवस्था से आत्मविश्वास** – रामायणकालीन लोगों का निश्चित व्यवसाय होने से उन्हें मजदूरी के विषय में आत्मविश्वास था क्योंकि उस समय सुव्यवस्थित जातिव्यवस्था थी। मनुष्य के जन्म के साथ ही उसका व्यवसाय निश्चित होता था। इससे व्यक्ति को घर में ही व्यवसाय का प्रशिक्षण मुफ्त में मिलता था और अनुचित स्पर्धा का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता था।[2] अतः रामराज्य में कोई कार्यार्थी (काम माँगने वाला) दिखाई नहीं

[1] -रामयण अरण्यकांड 9.30

[2] श्री वाल्मीकि रामायण दर्शन, पृष्ठ 21

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584- 0517

देता था, ऐसा लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर राम को निवेदन किया था।[3]

3. **वितरण** – रामकालीन लोग उत्पादित वस्तुएँ समाज को देते थे और समाज उनकी अन्य आवश्यकताओं को पूर्ण करता था।
4. **अर्थशास्त्र से नियंत्रण**- अर्थशास्त्र में केवल रोटी का ही नहीं अपि तु मानवी भावना, वासना तथा उनके नियमन का भी विचार होना चाहिए।
5. **अर्थव्यवस्था से आत्मविश्वास** – रामायणकालीन लोगों का निश्चित व्यवसाय होने से उन्हें मजदूरी के विषय में आत्मविश्वास था क्योंकि उस समय सुव्यवस्थित जातिव्यवस्था थी। मनुष्य के जन्म के साथ ही उसका व्यवसाय निश्चित होता था। इससे व्यक्ति को घर में ही व्यवसाय का प्रशिक्षण मुफ्त में मिलता था और अनुचित स्पर्धा का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता था।[4] अतः रामराज्य में कोई कार्यार्थी (काम माँगने वाला) दिखाई नहीं देता था, ऐसा लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर राम को निवेदन किया था।[5]
6. **वितरण** – रामकालीन लोग उत्पादित वस्तुएँ समाज को देते थे और समाज उनकी अन्य आवश्यकताओं को पूर्ण करता था।
7. **विनियोग** – 'अपने पास आए हुए धन का विनियोग करना ही चाहिए' ऐसा नैतिक बंधन उस समय था।[6] अतः प्राचीन वाङ्मय में यज्ञादि इष्टापूर्त कर्म का उल्लेख मिलता है।
8. **नीतिशास्त्र का विचार** – लोग स्वयं अपनी आय का $^{1}/_{6}$ भाग राजसत्ता को देते थे और राजसत्ता उसमें से ¾ भाग प्रजा के हितार्थ उपयोग करती थी।
9. **नीतिनिपुण मंत्रिगण** – रामराज्य के सभी मंत्री सर्वगुण संपन्न, सत्परामर्श देने में निपुण, यशस्वी, ईमानदार और नित्य राज्यकार्य में निरत रहने वाले थे ।[7]

अयोध्या नगरी के वर्णन प्रसंग में महर्षि वाल्मीकि लिखते हैं कि अयोध्यापुरी में सभी लोग सुखी, धर्मात्मा, ज्ञानी, अपने-अपने धन से संतुष्ट, निर्लोभी तथा सत्य बोलने वाले थे।[8] उस उत्तम अयोध्या नगरी में धनहीन कोई था ही नहीं बल्कि कम धन वाला भी कोई नहीं था, जितने कुटुंब वाले लोग थे उन सब के पास धन, धान्य, गाय, बैल और घोड़े थे ।[9] उसी प्रकार कोसलराज्य के संदर्भ में वाल्मीकि कहते हैं- धन, धान्य तथा गोधन से परिपूर्ण, तालाबों, उद्यानों एवं आम्रवनों से युक्त था।[10] प्रजा तथा राजा के सन्दर्भ में वाल्मीकि महर्षि का स्पष्ट मत है कि जो राजा प्रजा की रक्षा नहीं करता, वह राजा प्रजा की आय के छठे भाग का उपभोक्ता नहीं बन सकता।[11] इसी तरह के अनेक विचारों से यह कहा जा सकता है कि रामायणकालीन अर्थव्यवस्था एक आदर्श अर्थव्यवस्था थी ।

[3] दृश्यते न च कार्यार्थी रामे राज्यं प्रशासति । लक्ष्मणः प्राञ्जलिर्भूत्वा रामायैवं न्यवेदयत् ।। रामायण उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त 1.10

[4] श्री वाल्मीकि रामायण दर्शन, पृष्ठ 21

[5] दृश्यते न च कार्यार्थी रामे राज्यं प्रशासति । लक्ष्मणः प्राञ्जलिर्भूत्वा रामायैवं न्यवेदयत् ।। रामायण उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त 1.10

[6] नानाहिताग्निर्नायज्वा न क्षुद्रो वा न तस्करः । कश्चिदासीदयोध्यायां न चावृत्तो न तस्करः ।। रायायण बालकाण्ड 6.12

[7] अष्टौ बभूवुर्वीरस्य तस्यामात्या यशस्विनः । शुचयश्चानुरक्ताश्च राजकृत्येषु नित्यशः ।। रायायण बालकाण्ड 7.2

[8] तस्मिन्पुरवरे हृष्टा धर्मात्मानो बहुश्रुताः । नरास्तुष्टा धनैः स्वैः स्वैरलुब्धा सत्यवादिनः ।। रायायण बालकाण्ड 6.6

[9] नाल्पसंनिचयः कश्चिदासीत् तस्मिन् पुरोत्तमे । कुटुम्बी यो ह्यसिद्धार्थोऽगवाश्वधनधान्यवान् ।। रायायण बालकाण्ड 6.7

[10] प्राज्यकामा जनपदाः सम्पन्नतरगोरसाः। रामायण अरण्यकाण्ड 16.7

[11] षड्भागस्य च भोक्तासौ रक्षते न प्रजाः कथम् । रामायण उत्तराण्ड 74.32

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 3
July - September | ISSN – 2584- 0517

कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' मूलतः राज्य प्रबंधन का ग्रंथ है। कौटिल्य आधुनिक समय की माँग और पूर्ति के अर्थशास्त्र की मूल अवधारणाओं और कीमत के निर्धारण पर इसके संयुक्त प्रभाव से बहुत परिचित थे। उनकी राय में, एक राजा को किसी उत्पाद की आपूर्ति और माँग की स्थिति की परवाह किए बिना मनमाने ढंग से कीमत तय नहीं करनी चाहिए। कौटिल्य के अनुसार, राज्य को उत्पादन की लागत, माँग की तुलना में आपूर्ति का अनुपात, लाभ का उचित स्तर आदि पर विचार किए बिना कीमतें निर्धारित नहीं करनी चाहिए। इसी के साथ कौटिल्य कर (Tax) संरचना तथा वैदेशिक व्यापार की अवधारणा अपने ग्रंथ में स्पष्ट करता है।

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत संशोधन की पद्धति विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक है । रामायण में वर्णित लोगों का आर्थिक जीवन विश्लेषणात्मक पद्धति से प्रस्तुत किया गया है । रामायण तथा कौटिल्य अर्थशास्त्र के आधार पर उत्कृष्ट भारतीय अर्थव्यवस्था के आदर्श तत्त्वों का प्रतिपादन तुलनात्मक पद्धति से किया गया है । कुछ स्थानों पर आधुनिक अर्थव्यवस्था का विचार भी प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है ।

उपसंहार-

इसी प्रकार इस शोध निबंध में आधुनिक अर्थव्यवस्था की वृद्धि हेतु अर्थशास्त्र से नियंत्रण, आत्मविश्वास, विनिमय, नीतिशास्त्र का विचार आदि आदर्श तत्त्व रामायण तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र से उद्धरण पुरस्सर प्रस्तुत किए गए हैं, जिनका विचार आधुनिक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. **श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्,** सं 2047, गोरखपुर, गीताप्रेस
2. नारायण कुमार, **वाल्मीकीय रामायण में वर्णित आर्थिक जीवन**, 2017, दिल्ली, प्रशांत पब्लिशिंग हाऊस
3. आठवले पांडुरंग, **श्री वाल्मीकि रामायण दर्शन**, 1982, बम्बई, प्रबोधक मुद्रणालय
4. घिल्डियाल अच्युतानन्द, **वाल्मीकि कालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति**, 1995, वाराणसी, भारतीय प्राच्यविद्या शोध संस्थान
5. दीक्षित प्रभाकर, **वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक विचार**, 1991, दिल्ली, परिमल पब्लिकेशन्स
6. अग्रवाल गीता, **रामायण में प्रतिबिम्बित भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था**, 2001, बाँदा
7. गैरोला वाचस्पति, **कौटिलीय अर्थशास्त्रम्,** 2011, वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन
8. Sarkar, Sam, Kautilya Economics, An analysis and interpretation, IEJ, Vol. 47, No. 4, April- June, 1999-2000.